Year-3 Volume: I, Jan-March, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

परंपरागत संचार माध्यम और लोकनाट्य परंपरा

डॉ. प्रवीण कुमार झा
पोस्ट डॉक्टरल फ़ेलो, आई.सी.एस.एस.आर., दिल्ली
मोबाइल – 9868330336
ई मेल – pravin.tinkoo@gmail.com

सारांश

आधुनिक जनसंचार माध्यमों के पूर्व हमारे समाज में परम्परागत संचार माध्यम जैसे लोकनृत्य, लोक कथाओं, लोक गीत का लंबे समय तक प्रयोग होता रहा है। लोकनाट्यों का लोकजीवन से अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। यही कारण है कि लोक से संबंधित उत्सवों, अवसरों तथा मांगलिक कार्यों के समय इनका अभिनय किया जाता है। नृत्य, संगीत, कथा-वार्ताएं सब कुछ भारतीय लोक से जुड़ी हुई है। लोक माध्यम जो परम्परागत लोक कलाएं जैसे भजन, कीर्तन, रामलीला, रासलीला, नौटंकी, कठपुतली आदि सदियों से हमारी संस्कृति में रचे बसे हैं। तेजी से बदलते परिवेश के बावजूद भी परम्परागत लोक माध्यमों की अपनी एक अलग छवि व पहचान है। आज भी समाज में जागरूकता के लिए बड़े स्तर पर इसका उपयोग हो रहा है।

प्रस्तावना

भारत बहुजातीय, बहुसांस्कृतिक, बहुरंगी देश है। अनेक लोक कलाएँ, लोकनाट्य रूप(ज्ञात और अज्ञात) इसके विभिन्न प्रान्तों में बिखरे पड़े हैं। परंपरागत संचार का यह माध्यम भारतीय बहुजातीय संस्कृति को आज भी हमारे समक्ष विद्यमान है। सृष्टि के उत्पत्ति के साथ ही प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में संचार का विकास शुरू हो गया। ब्रम्हा ने सृष्टि के निर्माण के साथ देवो से संचार के कार्य का माध्यम नारद को चुना। जैसे जैसे युग बदला वैसे वैसे सभ्यता के विकास के साथ ही मुनष्य किसी न किसी रूप में संचार करता रहा है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके लिए बिना किसी संचार के जीवित रहना असंभव है। हम परिवार, समाज एवं समूह में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इसमें ही स्थिति और आवश्यकतानुसार परस्पर संचार करते रहते हैं। जब आज की तरह टेलीफोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया आदि की सुविधाएं नहीं थी, तब लोग चिट्ठी लिख कर अपना हाल-समाचार लोगों तक पहुँचाते और दूसरे का समाचार जानते थे। किसी भी सूचना, विचार या भाव को दूसरों तक पहुँचाना ही मोटे तौर पर संचार या कम्युनिकेशन कहलाता है। एक साथ लाखों-करोड़ों लोगों तक एक सूचना को पहुँचाना ही संचार या जनसंचार या मास कम्युनिकेशन मीडिया कहलाता है, और इस संचार व्यवस्था को सुचारू से चलाने का जो माध्यम कार्य करता है वह संचार माध्यम कहलाता है।

Year-3 Volume: I, Jan-March, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

पुराने समय में राजा के हरकारे पैदल या घोड़े की सवारी करते हुए राजा के संदेश राजधानी से दूसरी जगहों पर ले जाते और वहां से ले आते थे। आपने यह भी कई कहानियों में सुना होगा कि लोग कबूतरों के जरिए अपना संदेश भेजा करते थे। यही व्यवस्था बाद में एक सरकारी विभाग डाक-विभाग-बनाकर सबके लिए सुलभ कर दी गई थी। अब हर कोई एक निश्चित शुल्क देकर अपना संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से भेज सकता है। अब तो डाक व्यवस्था में इतने आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल किया जाने लगा है संदेश तार के जरिए पलक झपकते एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचा दिया जाता है। हर व्यक्ति अपने या अपने संबंधियों की सूचनाएं जानने के अलावा देश-दुनिया की खबरों के बारे में जानने का इच्छुक होता है। उसके आस-पास क्या हो रहा है, दुनिया में कहाँ क्या घटना घट रही है, सबकी जानकारी प्राप्त करना चाहता है। सूचनाओं की इसी भूख के चलते संचार माध्यमों का लगातार विकास और विस्तार होता गया। आज अखबार, रेडियो, दूरदर्शन, मोबाइल जैसे संचार माध्यम से सूचनाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती है। आधुनिक जनसंचार माध्यमों के पूर्व हमारे समाज में परम्परागत संचार माध्यम जैसे लोकनृत्य, लोक कथाओं, लोक गीत का लंबे समय तक प्रयोग होता रहा है। कश्मीर से कन्या कुमारी तक फैले भू-भाग पर विकसित कर रहा मानव समाज भारतीय लोक है। हमारे कृषक, अर्थशास्त्र, ज्ञान, साहित्य, कला, नृत्य, संगीत, कथा-वार्ताएं सब कुछ भारतीय लोक से जुड़ी हुई है। लोक माध्यम जो परम्परागत लोक कलाएं जैसे भजन, कीर्तन, रामलीला, रासलीला, नौटंकी, कठपुतली आदि सदियों से हमारी संस्कृति में रचे बसे हैं। तेजी से बदलते परिवेश के बावजूद भी परम्परागत लोक माध्यमों की अपनी एक अलग छवि व पहचान है। आज भी समाज में जागरूकता के लिए बड़े स्तर पर इसका उपयोग हो रहा है।

उदेश्य – वर्तमान भारतीय परिदृश्य मे परंपरागत संचार में लोक नाट्य परंपरा का अध्ययन।

शोध विधि – इस शोध में विश्लेषणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है। साथ ही इस विषय के अध्ययन में द्वितीयक सामाग्री जैसे साहित्यवलोकन आदि से इसे मूर्त आधार प्रदान किया गया है।

लोक नाट्य परंपरागत संचार

संचार माध्यम के परंपरागत माध्यम में लोक नाट्य भी काफी प्राचीन और युग-युगान्तर से चली आ रही है और आज भी यह परंपरा विद्यमान है। डॉ.वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी अपनी पुस्तक "भारतीय लोकनाट्य" की भूमिका में लिखते हैं –"लोककला रुपों की जातीय संस्कृति से गहरी निकटता रही है । ये कला रूप अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी विशिष्टता के अनुरूप परस्पर भिन्न शैल्पिक निजता रखने के बावजूद अंतर्वस्तु के स्तर पर गहरे एकात्म होते हैं । लोकगीतों, कलाओं और लोकनाट्य रूपों के सन्दर्भ में इसे देखा जा सकता है ।" लोकनाटकों के उदय की पृष्ठभूमि के बारे में बलवंत गार्गी का मत है कि "संस्कृत नाटक विद्वानों, श्रेष्ठियों और दरबारियों के लिए था । इसकी भाषा बहुत गूढ़ और अलंकृत होती थी। यह जनसाधारण के जीवन में घुला-मिला रहा है। समय के साथ-साथ यह अपना रूप बदलता और बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार अपने-आपको ढालता रहा है।" भारत में नाट्य की परंपरा अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है। भरत मुनि ने (ई.पू. तृतीय शताब्दी) अपने नाट्यशास्त्र में इस विषय का विशद वर्णन

किया है। नाट्यशास्त्र में वर्णित एक कथा से पता चलता है, देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने समस्त मानवों के मनोरंजनार्थ नाट्य की रचना की। शूद्रों के लिए वेदों के पठन-पाठन का अधिकार निषिद्ध था अत: पंचम वेद (नाट्य) की रचना अत्यंत आवश्यक प्रतीत हुई। इस देश में मुसलमानी शासन की प्रतिष्ठा के पश्चात् राजनीतिक एकसूत्रता नष्ट हो गई। मुसलमानी शासकों की प्रवृत्ति नाट्यकला की ओर उदासीन थी। फलत: उनके शासन में नाटकरचना तथा उसके अभिनय का ह्रास होने लगा। राजाश्रय के अभाव में इसका पतन स्वाभाविक ही था। संस्कृत साहित्य की नाट्यपरंपरा, जो हजारों वर्षों से अबाध गति से चली आ रही थी, सदा के लिए नष्ट हो गई। उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक गोस्वामी वल्लभाचार्य जी थे। इन्होंने कृष्णभक्ति का प्रचुर प्रचार किया। श्रीकृष्ण की बाललीलाओं का अभिनय मंदिरों, मठों तथा अन्य स्थानों में होने लगा, जिसको देखने के लिए श्रद्धालु जनता की भीड़ हजारों की संख्या में जुटने लगी। भगवान् कृष्ण की इसी प्रारंभिक लीला ने आगे चलकर 'रास लीला' का रूप धारण किया जो आज भी मथुरा तथा वृंदावन में बड़े प्रेम से की जाती है। उत्तर भारत में रामलीला का प्रचार गोस्वामी तुलसीदास जी की देन है। धीरे धीरे इन यात्राओं तथा कीर्तनों ने लाकनाट्य का रूप धारण कर लिया, जिसमें श्रीकृष्ण की लीलाएँ अभिनय के माध्यम से दिखलाई जाने लगीं। आज बंगाल में यात्रा या जात्रा तथा कीर्तन का प्रचुर प्रचार है। इस प्रकार उत्तर भारत में अनेक लोकनाट्यों का विकास हुआ जिनकी पृष्ठभूमि धार्मिक थी।

भारत के विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न प्रकार के लोकनाट्य प्रचलित हैं। उत्तर भारत में प्रचलित रामलीला और रासलीला, मध्यप्रदेश, विशेषतया मालवा प्रांत, में 'माँच' ('माँच' शब्द मंच का अपभ्रंश रूप है), राजस्थान में 'माँच' 'ख्याल' के रूप से प्रचलित है। इसका प्रारंभ 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से माना जाता है। मालवा में माँचों की परंपरा अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में नौटंकी का बड़ा प्रचार है। हाथरस की नौटंकी बड़ी प्रसिद्ध है। इसे 'स्वाँग' या 'भगत' भी कहते हैं। आगरा में 'भगत' नामक लोकनाट्य का प्रचुर प्रचार है। ब्रजमंडल में खुले हुए रंगमंच पर नौटंकी के ढंग पर 'भगत' का अभिनय किया जाता है। भिखारी ठाकुर के नाटक 'बिदेसिया' शैली भारत ही नहीं बल्कि विदेशो में भी बड़ा ही लोकप्रिय है जिसे देखने के लिए हजारों की भीड़ एकत्र हुआ करती है। महाराष्ट्र में तमाशा, ललित, गोंधल, बहुरूपिया और दशावतार आदि लोकनाट्य मराठी रंगमंच के आधार हैं। 'यक्षगान' दक्षिण भारतीय लोकनाट्य का वह प्रकार है जो तमिल, तेलुगु तथा कन्नड़ भाषा भाषी क्षेत्र की ग्रामीण जनता में प्रचलित है। तेलुगु में इसे 'विथि' या 'विथि भागवतम्' कहते हैं। यक्षगान की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। यह नृत्य नाट्य (डांस ड्रामा) है जिसमें गीतबद्ध संवादों का प्रयोग होता है। इसमें वर्णन का प्राधान्य होता है। इसकी कथावस्तु रामायण, महाभारत और भागवत से ली जाती है। 'विथि नाटकम्' या 'विथि भागवतम्' तेलुगु का लोकनाट्य है। इस नाटक में एक या दो ही पात्र रंगमंच पर आते हैं। स्त्रियाँ सामूहिक रूप से नृत्य करती हैं। नृत्य और अभिनय के द्वारा कृष्णलीला को 'विथि नाटकम्' का विषय बनाया गया है। इस प्रकार भारत के विभिन्न राज्यों में लोकनाट्य प्रचलित हैं जो बड़े ही लोकप्रिय हैं।

लोकनाट्यों का लोकजीवन से अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। यही कारण है कि लोक से संबंधित उत्सवों, अवसरों तथा मांगलिक कार्यों के समय इनका अभिनय किया जाता है। विवाह के अवसर पर अनेक जातियों में यह प्रथा है कि स्त्रियाँ

Year-3 Volume: I, Jan-March, 2021 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

बारात विदा हो जाने पर किसी 'स्वाँग' या 'साँग' का अभिनय प्रस्तुत करती हैं जिसे 'भोजपुरी' प्रदेश में 'डोमकछ' कहते हैं। लोकनाट्यों की भाषा बड़ी सरल तथा सीधी सादी होती है जिसे कोई भी अनपढ़ व्यक्ति बड़ी आसानी से समझ सकता है। जिस प्रदेश में लोकनाट्यों का अभिनय किया जाता है, नट लोग वहाँ की स्थानीय बोली का ही प्रयोग करते हैं। ये लोग अभिनय के समय गद्य का ही प्रयोग करते हैं। परंतु बीच-बीच में गीत भी गाते जाते हैं। लोकनाट्यों के संवाद बहुत छोटे तथा सरस होते हैं। लंबे कथोपकथनों का इनमें नितांत अभाव होता है। लंबे संवादों को सुनने के लिए ग्रामीण दर्शकों में धैर्य नहीं होता। अत: नाटकीय पात्र संक्षिप्त संवादों का ही प्रयोग करते हैं। लोकनाट्यों का कथानक प्राय: ऐतिहासिक, पौराणिक, या सामाजिक होता है। धार्मिक कथावस्तु को लेकर भी अनेक नाटक खेले जाते हैं। बंगाल के लोकनाट्य 'जात्रा' और 'कीर्तन' का आधार धार्मिक आख्यान होता है। राजस्थान में अमरसिंह राठौर की ऐतिहासिक गाथा का अभिनय किया जाता है। केरल प्रदेश में प्रचलित 'यक्षगान' नामक लोकनाट्य का कथानक प्राय: पौराणिक होता है। लोकनाट्यों में प्राय: पुरुष ही स्त्री पात्रों का कार्य किया करते हैं परंतु व्यवसायी नाटक मंडलियाँ साधारण जनता को आकृष्ट करने के लिए सुंदर लड़कियों का भी इस कार्य के लिए उपयोग करती हैं। लोकनाट्यों के पात्र अपनी वेशभूषा की अपेक्षा अपने अभिनय द्वारा ही लोगों को आकृष्ट करने की चेष्टा करते हैं। इन नाटकों के अभिनय में किसी विशेष प्रकार के प्रसाधन, अलंकार या बहुमूल्य वस्त्र आदि की आवश्यकता नहीं होती। कोयला, काजल, खड़िया आदि देशी प्रसाधनों से मुख को प्रसाधित कर तथा उपयुक्त वेशभूषा धारण कर पात्र रंगमंच पर आते हैं। कुछ पात्र प्रसाधन के लिए अब पाउडर और क्रीम का भी प्रयोग करने लगे हैं। लोकनाट्य खुले हुए रंगमंच पर खेले जाते हैं। दर्शकगण मैदान में आकाश के नीचे बैठकर नाटक का अभिनय देखते हैं। किसी मंदिर के सामने का ऊँचा चबूतरा या ऊँचा टीला ही रंगमंच के लिए प्रयुक्त किया जाता है। कहीं कहीं काठ के ऊँचे तख्तों का बिछाकर मंच तैयार किया जाता है। इन रंगमंचों पर परदे नहीं होते। अत: किसी दृश्य की समाप्ति पर कोई परदा नहीं गिरता। नाटक के पात्रगण किस पेड़ या दीवाल की आड़ में बैठकर अपना प्रसाधन किया करते हैं, जो उनके लिए 'ग्रीनरूप' का काम करता है।

आज भी आंध्र प्रदेश में लोकनाट्य परंपरा की एक शैली का नाम की 'वीथि नाटकम' मिलता है और आधुनिक नुक्कड़ नाटक अथवा स्ट्रीट थिएटर को भी इसी नाम से जाना जाता है। मध्यकाल में सही रूप में लोक नाटकों से मिलती-जुलती नाट्य-शैली का जन्म और विकास यदि भारत के विभिन्न प्रांतों, क्षेत्रों और बोलियों-भाषाओं में लोक नाटकों के रूप में हुआ तो उसी के समांतर पश्चिम में भी चर्च अथवा धार्मिक नाटकों के रूप में इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी और स्पेन आदि देशों में ऐसे नाटकों का प्रचलन शुरू हुआ जो बाइबिल की घटनाओं पर आधारित होते थे और मूलत: धर्म के प्रचार के लिए ही खेले जाते थे। परम्परागत संचार भारत में ग्रामीण संचार व्यवस्था के मूल में है। लोक भावनाओं की यदि सर्वाधिक सशक्त अभिव्यक्ति संभव है तो वह परम्परागत संचार के विभिन्न माध्यमों द्वारा ही हो सकती है। लोकगीत जैसे कजरी, बिरहा, चैती, निर्गुण आदि लोकनृत्य जैसे भागड़ा, भरतनाट्यम, गरबा आदि। लोकवाद्य जैसे शहनाई, सितार, तबला आदि, लोक सम्मेलन जैसे मेला, हाट, बाजार, उत्सव आदि। लोककलाएं जैसे

चित्रकारी, कसीदाकारी आदि एवं लोकनाट्य जैसे रामलीला, रासलीला आदि सभी परम्परागत संचार के वाहक हैं। दृश्य-श्रव्य माध्यमों में नुक्कड़ नाटक, नौटंकी, रामलीला, कृष्णलीला, कठपुतली आदि है। नाटक - नाटक का विकास नृत्य से हुआ है। नृत्य का भाव व विचार का विस्तार होने के पश्चात् वह नाट्यरूपों में परिवर्तित हो गया। नाटक आम जनमानस के लिए परम्परागत रूप से मनोरंजन एवं जागरूक करने का माध्यम रहा है। हिन्दी प्रदेशों में लोक नाट्य का विकास 15वीं शताब्दी के बाद हुआ है। विभिन्न प्रदेशों के अपनी संस्कृति की झलक लिए हुए अलग-अलग लोक नाटक है। उत्तर प्रदेश में नौटंकी, बंगाल में जाला, मध्य प्रदेश में मंच, कर्नाटक में यक्षगण, तमिलनाडु में थेरूकुढ़, महाराष्ट्र में तमाशा, गुजरात में भवई मुख्य रूप से परम्परागत नाटक है।

निष्कर्ष -- परम्परागत जनसंचार माध्यम ग्रामीणों के करीब होने के कारण लोक संचार माध्यम भी कहे जाते हैं। यह माध्यम ग्रामीणों की रोजमर्रा जीवनशैली से मेल खाते हैं। इनकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि कोई व्याकरण या साहित्य न होने के बाद भी इनका विकास मौखिक या क्रियागत स्रोतों के माध्यम से होता रहता है। परम्परागत माध्यमों के द्वारा मूल्यों और विचारों का एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक हस्तान्तरण हुआ है। आधुनिक माध्यम के बहुमुखी विकास के बावजूद भी हमारी लोक संस्कृति में रचे बसे परम्परागत माध्यमों के प्रभाव में कमी नहीं हुई है। आज भी दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों में आयोजित ऐसी नुक्कड़ नाट्य प्रतियोगिताओं में जो लोक नाट्य आयोजित हो रही है, जो सचमुच में आपको बाहर-भीतर से झिंझोड़कर रख देते हैं और सोचने पर विवश करते हैं। भारतीय लोक नाट्य केवल समृद्ध ही नहीं है बल्कि बहुरंगी और गतिमान भी है । हिंदी पट्टी के नाट्य-रूपों के अतिरिक्त कश्मीर का 'जश्न', राजस्थानी का 'ख्याल',गुजरात का 'भवाई', बंगाल का 'जात्रा',असम का 'अंकिया नाट', महाराष्ट्र का 'तमाशा', आन्ध्र प्रदेश का 'वीथी भागवत', तमिलनाडु का 'थेरुकुट्टू', कर्नाटक का 'यक्षगान', केरल का 'कथकली' इत्यादि अन्य लोकनाट्य रूप हैं, जो भारतीय रंगमंच की उपलब्धि हैं । भारत में अनेकता में एकता की बात की जाती है, वह इन लोकनाट्यों में दिखायी देती है। यह एकता कथानक, प्रदर्शन, पूर्वरंग, अभिनय, दर्शक-प्रभाव आदि से बनती है। जहाँ तक इनकी प्रस्तुति का गणित है, तो वह भी अलिखित तौर पर लगभग एक जैसा दिखाई पड़ता है । दरअसल, "इन लोकनाट्यों के पात्र अपनी परंपरागत शैली में मंच पर अभिनय करते हैं, किन्तु कोई भी यथार्थवादी शैली अपनाने का प्रयास नहीं करता । यहाँ तक कि किस गीत के साथ कैसा अभिनय, संवाद या नृत्य होगा, यह रूढ़ हो गया है। परिणामतः लोकनाट्यों का सम्पूर्ण आनंद उनकी परंपरागत शैली में निहित है। दर्शकगण उसकी तड़क-भड़क की अपेक्षा उसके काव्य-पक्ष का रस लेते हैं साथ परंपरागत संचार के रूप में अपनी प्रयोजनीय भूमिका का निर्वहन कर रहे है।

संदर्भ सूची :

गुप्ता, डॉ संजीव.(2012). *मास कम्युनिकेशन*. गाजियाबाद:श्रुति बुक्स.

त्रिपाठी, डॉ॰ वशिष्ठ नारायण. (2001). *भारतीय लोकनाट्य*. दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

गार्गी, बलवंत. *रंगमंच*.

शर्मा, विश्वनाथ.(1979). *रंगमंच का उद्भव व विकास*. जोधपुर : उषा प्रकाशन.

चौबे, डॉ॰ कृपाशंकर. *संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति*. वर्धा : हिन्दी समय.

अंकुर, देवेंद्रराज. *गली गली में नुक्कड़ नाटक*.

राठौड़, डॉ. दिग्विजय सिंह.(2014). *परम्परागत जनमाध्यम: एक अवलोकन*. www.apanimati.com

पांडे, डॉ मुन्ना. *हिंदी लोकनाट्य : विविधता में एकता*.

पतंग, अनिल. *लोकनाट्य का अनगढ़ हीरा*. रंग संवाद. जनवरी – मार्च 2012.

पांडे, डॉ मुन्ना. *लोकनाटकों की रंगभाषा*. नई दिल्ली : सम्यक भारत.

http://sanatkumar007.blogspot.com

http://jaaneanjaane.blogspot.in

The Asian Thinker